

## श्री दामोदराष्टकं

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपं, लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् । यशोदाभियोलूखलाद्भावमानं, परमृष्टमत्यं ततोदृत्य गोप्या ॥1॥	वह भगवान् जिनका रूप सत, चित और आनंद से परिपूर्ण है, जिनके मकरो के आकार के कुंडल इधर उधर हिल रहे हैं, जो गोकुल नामक अपने धाम में नित्य शोभायमान हैं, जो (दूध और दही से भरी मटकी फोड़ देने के बाद) मैय्या यशोदा की डर से ओखल से कूदकर अत्यंत तेजीसे दौड़ रहे हैं और जिन्हें यशोदा मैय्या ने उनसे भी तेज दौड़कर पीछे से पकड़ लिया है ऐसे श्री भगवान् को मैं नमन करता हूँ ॥1॥
रुदन्तं मुहुर्नेत्रं-युग्मं मृजन्तं, करम्भोज-युग्मेन सातङ्क-नेत्रम्। मुहुःशवास-कम्पत्रिरेखाङ्क-कण्ठ- स्थित-ग्रैवं दामोदरं भक्तिबद्धम् ॥2॥	(अपने माता के हाथ में छड़ी देखकर) वो रो रहे हैं और अपने कमल जैसे कोमल हाथों से दोनों नेत्रों को मसल रहे हैं, उनकी आँखें भय से भरी हुयी हैं और उनके गले का मोतियों का हार, जो शंख के भाति त्रिरेखा से युक्त है, रोते हुए जल्दी जल्दी श्वास लेने के कारण इधर उधर हिल-डुल रहा है, ऐसे उन श्री भगवान् को जो रस्सी से नहीं बल्कि अपने माता के प्रेम से बंधे हुए हैं मैं नमन करता हूँ ॥
इती क्व स्वलीलाभिरानन्द-कुण्डे स्वघोषं निमज्जन्तामख्यापन्तम्। तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं, पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥3॥	ऐसी बाल्यकाल की लीलाओं के कारण वे गोकुल के रहिवासीओं को आध्यात्मिक प्रेम के आनंद कुंड में डुबो रहे हैं, और जो अपने ऐश्वर्य सम्पूर्ण और जानी भक्तों को ये बतला रहे हैं की "मैं अपने ऐश्वर्य हिन और प्रेमी भक्तों द्वारा जीत लिया गया हूँ", ऐसे उन दामोदर भगवान् को मैं शत शत नमन करता हूँ ॥
वरं देव! मोक्षं न मोक्षावधिं वा न चान्यं वृणोऽहं वरेशादपीह । इदन्ते वपुर्नाथ! गोपालबालं सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यै ॥4॥	हे भगवान्, आप सभी प्रकार के वर देने में सक्षम होने पर भी मैं आप से ना ही मोक्ष की कामना करता हूँ, ना ही मोक्षका सर्वोत्तम स्वरूप श्री वैकुण्ठ की इच्छा रखता हूँ, और ना ही नौ प्रकार की भक्ति से प्राप्त किये जाने वाले कोई भी वरदान की कामना करता हूँ । मैं तो आपसे बस यही प्रार्थना करता हूँ की आपका ये बालस्वरूप मेरे हृदय में सर्वदा स्थित रहे, इससे अन्य और कोई वस्तु का मुझे क्या लाभ ?
इदन्ते मुखाम्भोजमव्यक्तद्व-नीलै- र्वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या । मुहुश्चुम्बितं बिम्ब-स्लताधरं मे मनस्ताविरास्तामलं लक्ष्माभैः ॥5॥	हे प्रभु, आपका श्याम रंग का मुखकमल जो कुछ घुंघराले लाल बालों से आच्छादित है, मैय्या यशोदा द्वारा बार बार चुम्बन किया जा रहा है, और आपके ओठ बिम्बफल जैसे लाल हैं, आपका ये अत्यंत सुन्दर कमलरूपी मुख मेरे हृदय में विराजीत रहे । (इससे अन्य) सहस्रों वरदानों का मुझे कोई उपयोग नहीं है ।
नमो देव! दामोदरान्त! विष्णो! प्रसीद प्रभो! दुःख-जालाब्धि-मग्नम्। कृपा छि-वृष्टयातिदीनं बतानु- गृहाणेऽ! मामज्ञमेध्यक्षि- श्यः ॥6॥	हे प्रभु, मेरा आपको नमन है । हे दामोदर, हे अनंत, हे विष्णु, आप मुझपर प्रसन्न होवे (क्योंकि) मैं संसाररूपी दुःख के समुन्दर में डूबा जा रहा हूँ । मुझ दिन हिन पर आप अपनी अमृतमय कृपा की वृष्टि कीजिये और कृपया मुझे दर्शन दीजिये ॥
कुबेरात्मजौ बद्ध-मूर्त्यैव यद्वत् त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ चा तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मै प्रयच्छ न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥7॥	हे दामोदर (जिनके पेट से रस्सी बंधी हुयी है वो), आपने माता यशोदा द्वारा ओखल में बंधे होने के बाद भी कुबेर के पुत्रों (मणिग्रिव तथा नलकुबेर) जो नारदजी के श्राप के कारण वृक्ष के रूप में मूर्ति की तरह स्थित थे, उनका उद्धार किया और उनको भक्ति का वरदान दिया, आप उसी प्रकार से मुझे भी प्रेमभक्ति प्रदान कीजिये, यही मेरा एकमात्र आग्रह है, किसी और प्रकार की कोई भी मोक्ष के लिए मेरी कोई कामना नहीं है ।
नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरहीप्तिधाम्ने त्वदीयोदरायथ विश्वस्य धाम्ने। नओ राधिकायै त्वदीय-प्रियायै नमोऽनन्त-लीलाय देवाय तुभ्यम् ॥8॥	हे दामोदर, आपके उदर से बंधी हुयी महान रज्जू (रस्सी) को प्रणाम है, और आपके उदर, जो निखिल ब्रह्म तेज का आश्रय है, और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का धाम है, को भी प्रणाम है । श्रीमती राधिका जो आपको अत्यंत प्रिय है उन्हें भी प्रणाम है, और हे अनंत लीलाएं करने वाले भगवान्, आपको प्रणाम है ।

**सर्व मंगलमयी कार्तिक व्रत । त्यस्त बैंगलूर वासियों के लिए ।**

जो कार्तिक मास में हर रोज भगवान् श्री दामोदर (श्री कृष्ण) को घी की ढीपक से आरती करते हैं और दामोदराष्टक गाते हैं उनके सारे पाप नाश हो जाते हैं और वे भगवान्

श्री कृष्ण की विशेष कृपा के पात्र बनते हैं ।



ISKCON®

श्री नरसिंह-गिरिधरि मंदिर

94835 24433

giridhari.com



ISKCON®